

साहित्यअकादमी, मैथिलीक संदर्भमे ●
आधुनिक मैथिली कविताक भूमिका ●
सहरसा, बुपहर राति ●

मड
१९७१

वेदेही

विस्मरण में थि ली मा सि की

पूर्णियाँ, १२ मइ। बिहारक राज्यपाल श्रीदेवकान्तवरुआमहोदय बिहारक शिक्षाक क्षेत्रमे पिछड़ल रहबाक कारणपर प्रकाश दैत अपन मत अभिव्यक्त कयलनि अछि जे प्रायः प्रत्येक स्तरपर मातृभाषामे शिक्षाक अनिवार्य व्यवस्था कयल जयबाक चाही, जाहिसँ बौद्धिक विकास समुचितढंगसँ भऽ सकय। राज्यपालमहोदय धन्यवादकेर पात्र छथि जे एहि वैज्ञानिक कथ्यकेँ स्पष्ट कयलनि अन्यथा एहिठामक राजनीतिक लोकनिकेँ तँ सभवातक उनटे अर्थ लागैत छनि। नारीशिक्षाकमी, उच्छृङ्खलता आर स्तरमे छुलहीपन—ई सभटा होइछ मातृभाषामाध्यमे शिक्षाक अभावें। 'नाम' (संज्ञा) शब्द, भाषा-रेलक डिब्बा थिक आर 'क्रिया' शब्द इञ्जिन। कोनो अपरिचित रेलगाड़ीपर चढ़ल विदेशी भाव-भूमिपर विचरण कयने बालमानस की सीखि सकैछ, मात्र अपन परंपरासँ कटि जेबाक अलावा। आगाँ चलिकऽ बालक जखन युवक होइछ, नकलकरब मात्र सीखि जाइछ। आर 'बाप' माने डैमफूल, 'मैथिली' माने पान-बीड़ी, अपन 'संस्कृति' माने बोगसीटी ... नकलकरू, पहिरावामे, परीक्षामे, नौकरीलेल ... नकलमाने नक्सलवाद ... सहस्रबाहु मुदा, शीर्षहीन युवकसमुदाय ! तखन हिनका सँ अपने की आशा करैत छी ? जखन चुट्टी अहाँकेँ काटल जाइत अछि, छिहुलि उठैत छी आर दोसरवेरमे 'बाहलगे !' कहू त' ई अराजकीयता कतेकदिन चलत ? कहियाधरि अपन मातृभाषाक स्थानपर संप्रदाय, राजनीति आर स्वार्थलेल कृत्रिम भाषा आर विभाषाकेँ माथपर ऊघने चलब ? एतय मैथिलीक सङ हिन्दीकेँ घोसिअयबाक कोनो दरकार नहि। हिन्दी हमरासभक 'गाइड' थिक देशदर्शनलेल, आ' जखन 'गाइड' घरमे घोसियाकऽ बहू-बेटीक इज्जतिसँ खेलपपर उतरि आवय ?

अपन भाषाक अपन शब्द होइछ। अपन शब्दक अपन अर्थ-स्नेह होइछ। ओ शब्द हमरेसभक मुखसँ बहार भेल अछि, जकर अर्थ हमरेलोकनिक माथमे रहैछ। मातृभाषाक ब्रह्मा हमरालोकनि स्वयं छी। आउ, शब्द कुहरैत अछि, एकरा जिह्वा लगाली।

बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालय हेतु स्वीकृत

एक प्रति : ०.४०

विशेषांक : ०.७५

वार्षिक : ४.००

आजीवन : ५१.००

संरक्षण : १२५.००

डाक व्यय : निःशुल्क

वै दे ही

मैथिली मासिकी

प्रकाशनक तेइसम वर्ष

संस्थापन-प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र [कुमार]

श्रीकृष्णकान्तमिश्र द्वारा मिथिला प्रेस द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

सम्पादक

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

अतिथि सम्पादक

श्रीसोमदेव

एहि अंकमे

सम्पादकीय १५०

पत्र ओ प्रतिक्रिया १५२

समाद ओ सूचना १५३

सामयिक प्रसंग

साहित्य-अकादमी,

मैथिलीक संदर्भमे / श्रीराजमोहनभा १५६

विशेष निबंध

आधुनिक

मैथिली कविताक

भूमिका / प्रो० श्रीशंकरसोम १५६

देश-देशान्तर

ऊँच पहाड़ / श्रीपो-चुई १७६

उज्जर रंग / श्रीजोजेकैवेरिन्हा १७७

कविता

जीवन-जागरण / श्रीमार्कण्डेय प्रवासी १७७

चौबटिया पर / प्रो० श्रीप्रफुल्लकुमारमौन १८०

नगरकथा

सहरसा, दुपहर राति / श्रीसुभाषचन्द्रयादव १७८

सरस पृष्ठ

किछु

अविस्मरणीय सूत्र / श्रीराजवल्लभप्र० सिंह राठौर १८१

प्राप्ति स्रोत

वैदेही समिति

दरभंगा

नवीन कथाकार अंकमे हमर परिचयमे अहाँ लिखने छी—‘प्रकाशित होमयवला हिनक ई पहिलौठे पिहानी छनि।’ किसानायत अपने वैदेहीक सितम्बर ६६, मार्च ६७, अगस्त ६९ आ अप्रैल ७०क अंकपर दृष्टिपात नहि केने छलियैक।

अपन बचनानुसार, वैदेहीक हेतु हम किछु नहि कऽ सकलहुँ। आन-ठाम प्रतिष्ठा पौनिहार व्यक्तिक वचनअवद्धताकेर ई ज्वलंत दृष्टांत छल। हँ, जनगणनामे अधिकांश प्रगणकसँ सम्पर्क केलाउत्तर, कालम १४ मे मातृभाषाक केर स्थानपर, मैथिली लिखाओल। जे प्रगणक एहिसँ विमख भेलाह, ओ कम्युनिष्ट एवं कठपिगिल छलाह।

हँ, अहाँकेर कल्याणी-विशेषांक ओ अविकसित कली छल, जकर पराग, प्रस्फुटित होएबाक पूर्वहि, वातावरणकेँ सुगन्धित कऽ देलक। उन्नैस-सए सत्तरिक अंतिमअंक ‘अन्त भला तऽ सभ भला’ केँ चरितार्थ कैलक। नवीनकथाकारअंकक माध्यमसँ पूतक पएर भुलनेमे बुझना गेल। आ, आव एहि तरहक अंकसभ प्रकाशित भऽ रहल अछि, जाहिसँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक विकास अवश्यम्भावी। आ’ एहि सभक एकमात्र श्रेय, अहाँक वैदेहीकप्रति लगनशीलता आ’ भाषाकप्रति कर्मठताकेँ। दस्तुतः वैदेही आव मात्र फुलडाली नहि, परागमिश्रित प्रस्फुटित पुष्पोद्यान भऽ गेल। शुक्लपक्षक चानजकाँ, एकर तीव्रगतिसँ विकास हो, ई हमर शुभकामना। आ’ लेखक-लोकनि अपन ओहि नवीनरचनासँ सहयोग करथु, जाहिसँ समाजकेँ एकटा नवीनदृष्टिकोण प्राप्त हो, आ’ जे रचना समाजकेर नैतिकपरिवर्तन करबामे सक्षम हो।

एहि संदर्भमे श्रीगिरिधरगोपाल, मुरलीसँ नजि, लेखनीसँ, धुनि नजि, मक्खन लिखि, व्यंगक तेहन भरिगर चाट लगौने छथिन्ह, जे हुनका, ओकरा गुनगुनाहटिसँ नजि, रुनरुनाहटिसँ, मुग्ध भऽ कऽ नजि, लोहछिकै गोपीसभ नजि, मक्खनप्रेमीलोक, नृत्य करऽ नजि, भमहोड़िकै, काटऽ दौड़तन्हि।

श्रीभीमनाथझाजीकेर भीमकायकविता बड़ नीक लागल। आ’ ओहूँसँ बेसी नीक लागल, ‘गदहाक नाङरि’केँ नाङरियेक स्थानपर विराजमान देखि। ‘पत्र ओ प्रतिक्रिया’ स्तम्भ (जहन स्थायी हो) बड़ सुरेबगर, आ’ रचनाक छोरपर रचयिताक ठेकाना, सेहो कम सुरेबगर नजि। पुनः पुनः वैदेहीक प्रति अहाँक लगनशीलता आ कर्मठताकप्रति हमर हार्दिक शुभकामना।

—राजवल्लभप्रसादसिहराठौर, वखरीवाजार, मुँगेर

समाद ओ सूचना

राज्यपालमहोदयद्वारा चन्द्रधारीसंग्रहालयकेर
परिभ्रमण एवं अवलोकन
(संग्रहालयद्वारा प्रसारित समाचार)

दरभंगा । दिनांक २००४-७१ । महामहिम राज्यपाल श्रीदेवकान्तवरुआजीक
आइ प्रातःकाल ९-१५ चन्द्रधारीसंग्रहालय, दरभंगामे शुभागमन भेलनि ।
संग्रहालयकेर मुख्यदाता श्रीमान्बाबूचन्द्रधारीसिंहजीक ज्येष्ठपुत्र श्रीमान्शशि-
धारीसिंहजीक करकमलसँ माल्यार्पण केल गेलनि । संग्रहालयकेर
बिहारसैन्यसशस्त्र-आरक्षीदलद्वारा विधिवत् सलामी देल गेल । तत्पश्चात्
संग्रहालयाध्यक्षद्वारा प्रबन्धसमितिक सदस्यगणक परिचय राज्यपालमहोदयके
कराओल गेलनि । प्रबन्धसत्तिक सदस्यगण, निदेशक, पुरातत्व एवं
संग्रहालय, बिहार, पटना, एवं संग्रहालयकर्मचारीगणकसङ महामहिम राज्यपाल
महोदयक छायांकन सम्पन्न भेल ।

संग्रहालयक प्रदर्शनसभक अवलोकनार्थ मुख्यद्वारमे प्रवेश करिते ओतय
अवस्थित प्राचीन ऐतिहासिक बुद्धक प्रस्तरप्रतिमा जे जरहटिया, मधुवनीसँ एवं
प्रस्तरस्तंभ, जे हाटी, सुपौल (बिरौल) सँ प्राप्त भेलछि, देखल । सर्वप्रथम राज्य-
पाल संग्रहालयक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदर्शनकक्षके देखलनि । महाभारत, अक्षौ-
हिनी सेना, विश्वरूपदिग्दर्शन एवं जनकसभादिचित्रक गूढतम विषयसभक सूक्ष्म
अवलोकन कयलनि एवं सांस्कृतिक विभागद्वारा चलि रहल अनुसंधानपूर्ण
कार्यसभक प्रशंसा कयलनि । नेपाली एवं कांस्य प्रतिमासभके देखिकऽ
आह्लादित भऽ उठलाह । मुख्यदाता श्रीमान्बाबूचन्द्रधारीसिंहजीक पुस्तक
अमरकोषक अध्ययन कयलनि तथा प्रशंसा कयलनि । बाबूश्रीशशिधारीसिंह
द्वारा ब्रह्मसूत्र एवं निदेशक, पुरातत्व संग्रहालय, बिहार (पटना) द्वारा संग्रहा-
लयक विभिन्न प्रकाशन सादर समर्पित कयल गेलनि ।

संग्रहालयाध्यक्ष महोदय राज्यपालमहोदयक अभिनन्दनपत्र, भोजपत्रपर
मिथिलाक्षरमे लिखित तथा सिक्कीनिर्मित बिड़हरामे राखल समर्पित कयलनि ।

राज्यपालमहोदय मिथिलाक प्राचीन परंपरामे एहि प्रकारक अभिनन्दनपत्र सँ गद्गद् भऽ गेलाह । ई बिड़हरा श्रीमतीसाधनाचौधरी, धर्मपत्नी श्रीभरतकुमार चौधरी, मिर्जापुर, दरभंगा द्वारा बनाओल गेल छल ।

मिथिलाक लोककला, जितवारपुरक चित्रांकन तथा महिलाकलाकार-लोकनिक कला देखि राज्यपाल मुग्ध भऽ गेलाह । मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो० श्रीसोमदेव, संपादक, वैदेही, दरभंगा एवं पुराणाचार्य पं० श्रीरमानन्द झा पो० पातेपुर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुरक परिचय राज्यपाल महोदयक सङ्ग संग्रहालयाध्यक्षद्वारा कराओल गेल ।

सिक्की-निर्मित ताजमहल, नोहसँ निर्मित कढ़ाई, पाथरपर सितुआसँ बनल प्रदर्श तथा जहाँगिरक प्यालम देखाओल गेलनि । संग्रहालयक प्राचीनचित्रसभ यथा, मुगल, राजस्थानी एवं फारसीशैलीक चित्रसभ हुनक ध्यान आकृष्ट कयलकनि । हाथीदाँतक प्रदर्श, बाँसक कोपड़पर चित्रकारी आ' अतिप्रशस्तजनसुश्रुत गीतावर्णित पांचजन्यशंख तथा दक्षिणव्रतशंख देखिकऽ हर्षित राज्यपालमहोदय हकीके लिखित कुरानक आयत तथा प्राचीन बहुमूल्य आभूषणादिसङ्ग हीरा, मानिक, पन्ना आदि अनेकानेक जवाहरात आदिक मुक्त प्रशंसा कयलनि ।

महामहिम राज्यपालमहोदयक सङ्ग मिथिलाक प्रसिद्ध नेता पं० श्रीहरिनाथमिश्र, तिहुँतप्रमंडलक आयुक्त, जिलाधीश, आरक्षीअधीक्षक, असैन्यशल्यचिकित्सक, निदेशक, पुरातत्व एवं संग्रहालय तथा प्रबन्धसमितिक अन्य सदस्यगण उपस्थित छलाह ।

राज्यपालमहोदयकेँ समर्पित अभिनन्दन पत्र :

महामहिम राज्यपाल, बिहार, कविप्रवर श्रीदेवकान्तबरुआमहोदय !
॥ वैदेहीक एहि पुण्यभूमिमे अपनेक आगमनक स्वागत करैत हमरालोकनि मैथिलसमुदायमध्य भान भऽ रहल अछि, जे आइ पाँचसए बरिसक उपरांत असमक महान मैथिलीसाहित्यकार शंकरदेव पुनः अपन अमल-धवल, कमल-कोमल, कांतकलेवरमे अवतरित भेलाह अछि ॥ मोन पड़ैत अछि, रामविजय (शंकरदेवरचित) नाटकमे धनुषभंगकाल सीताक शंका. "हा, हा, हामार स्वामी

परम सुकुमार नवीन वयस ।” मोन पड़ैत अछि जन्मयात्रा (गोपालरचित) मे देवस्तुति, “देवग सवै नमस्कार करिये कर पूरि तुति करिते लागल, ता देखह, शुनह !....हे परमेश्वर, तोहा देवक परमदेवता सनातन सर्व्व अन्तर्यामी !” से हे चिरनवीन हृदयवाला कविवर ! अपनेक स्मितिमे असम ओ मिथिलाक सम्बद्धक नवीकरण प्रतिभासित भऽ रहल अछि ॥ विश्वास अछि जे अपनेक छत्रछायामे मैथिली ओ असमिया साहित्य पुनः एकसूत्रमे बन्हत ॥ अपने, हे सूत्रधर एहि प्राच्यभूमिलेल नवचेतनाक प्रतीकजकाँ भास्वर होएव ॥ एहि आस्थाकसंग वैदेही-समिति एहि विकासपथपर मंगलपुष्प सजा रहल अछि ॥ अपन सांस्कृतिक परंपराक मर्यादास्वरूप अपनेकेँ अपन बाँस-फूसक घरमे पाबि अपन समस्त मनसा एवं वाचा अपनेक कर्मठहाथमे, ई सम्मानपौती समर्पित करैत उद्भवेलित भऽ उठल छी, हे भावसागर, कविप्रभु !!

हमछी अपनेक

मैथिली साहित्यकार, सदस्यगण

॥ अखिलभारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन ॥ वैदेही समिति, दरभंगा ॥

साहित्य-अकादमी दिल्ली

दरभंगा अधिवेशन, रवि, २३-मइ १९७१

वैदेही-समितिद्वारा आहूत साहित्य-अकादमी (मैथिली विभाग)क बसाड़ी, २३ मइ-७१ केँ वैदेही समितिक नवीन भवन, तंत्रवती गीताभवनक लग दिग्धी-पोखरि, दरभंगा रेलवेस्टेशनसँ पच्छिम होमय जा रहल अछि । एहि अवसरपर मैथिलीभाषी विद्वानलोकनिकेँ यथासंभव आमंत्रण देल जा रहल छनि । अधिवेशन प्रातः ७ बजेसँ आरंभ भऽ जाएत । संध्या ७ बजे आयोजित सम्मान ओ सांस्कृतिक समारोहमे सम्मिलित हेबाकलेल सार्वजनीन हकार देल जा रहल अछि ।

साहित्य-अकादमी-चर्चा—२ एतय देल जा रहल अछि॥ चर्चा—१ दिसम्बर
'७१ मे छपल छल । प्रबुद्ध पाठककेर विचार अमन्त्रित अछि । आउ हमरालोकनि अपन
एक एक गोठ प्रश्नपर एहिना विचार करी । —सं० ।

साहित्य-अकादमी : मैथिलीक सन्दर्भमे

श्रीराजमोहनझा

एहि बेरका साहित्य-अकादमी-पुरस्कार-वितरण - समारोहक बाद
'टाइम्स ऑफ इन्डिया' मे जे समाचार प्रकाशित भेल, ताहिमे ई सूचना देल गेल
छल जे 'एहि वर्षसँ' अकादमी डोगरी तथा मैथिलीकेँ सेहो पुरस्कार देब
आरम्भ कैलक अछि ।' डोगरी भाषाक पुस्तकपर एहि वर्ष प्रथमवेर पुरस्कार
भेटलैक अछि, मुदा मैथिलीकेँ साहित्य-अकादमीद्वारा मान्यता भेटबाक
घटना पाँच वर्ष पुरान भऽ चुकल अछि तथा एहि बीच चारिटा मैथिलीपोथी
पुरस्कृत भऽ चुकल अछि ।

उपर्युक्त तथ्य हमरा 'टाइम्स ऑफ इन्डिया' सन प्रतिष्ठित पत्रक
अज्ञानपर हँसबाक अधिकार त दऽ दैत अछि, मुदा एहिपर कने गंभीररूपेँ सेहो
सोचल जा सकैत अछि । की कारण अछि जे साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता
भेटलाक पाँचवर्षवादधरि हम ओही अवस्था मे छी, जाहि मे अन्तः हमरा
विषय मे लोक भ्रामक धारणा रखबाक 'छूट' लऽ सकैत अछि ? ई कहनाइ
हास्यास्पद हैत जे एना जानि बुझि कऽ, द्वेषभाव सँ प्रेरित भऽ, कैल जा रहल
अछि । वास्तविकता ई अछि जे हमरा सभकेँ संवैधानिक मान्यता जे भेटि
गेल हो, ओकर समुचित उपयोग कऽ लोकक समक्ष अपन एकटा सुनिश्चित आ
ठोस 'इमेज' बनाकऽ रखबामे हमसभ अक्षम भेल छी । एहन स्थितिमे, हमरा
नहि बुझाइत अछि, जौं अष्टम अनुसूचीमे हमरासभकेँ स्थान दैए देल जाय, त
हम सभ की कऽ लेब ? हमरा विषयमे लोक तखनो अहिना अन्धकारमे रहत,
अहिना अपन अज्ञानक नमूना देत, अहिना हमसभ उपेक्षित अनचिन्हार बनल
रहब ।

हमरा विषयमे लोक केहन-केहन अज्ञान पोसने अछि, तकर ज्वलंत नमूना 'नई कहानियां' आ 'बाल भारती' सन प्रतिष्ठित पत्रिकामे देखल जा सकैत अछि, जाहिमे मैथिली कथा आ लोककथा क्रमशः 'मैथिल' तथा 'मैथिल लोककथा' क चिप्पी सग प्रकाशित कैल जाइत अछि। जौं हिन्दियोक प्रतिष्ठित सम्पादक लोकनि केँ अखन धरि हमरा भाषाक शुद्ध नाम नहि जानल छैन्ह, त ई बात सम्पादक सँ अधिक हमरा सभ लेल लज्जाक विषय अछि।

साहित्य-अकादमी एकटा मजबूत-डारि हमरा सभ केँ भेटल, जकरा पकड़ि हमसभ गाछक फुनगी धरि पहुँचि सकैत छलहुँ। मुदा डारि पकड़ि भूले भुलबामे हम अपन उपलब्धि बुझि लेलहुँ। मैथिलीक चारिटा पोथी पुरस्कार पाबि चुकल अछि, एहि बातपर हम कतेक दूर धरि गर्व कऽ सकैत छी, जखन देखैत छी जे एहिमे सँ एकोटा अथवा चारू मिलियो कऽ, लोक-मानसपर एतबो छाप नहि छोड़ि पौलक अछि, जे लोक एतबो मऽन राखय जे पछिला चारि-पाँच वर्ष सँ मैथिली केँ पुरस्कार भेटि रहल छै ! आश्चर्य जे पुरस्कृत पोथीमे 'पत्रहीन नग्न गाछ' क अछैत ई स्थिति अछि ! मुदा तकर कारण प्रायः ई जे बेसी लोक एतबे जनैत अछि जे नागार्जुन केँ (यात्री केँ नहि) पुरस्कार भेटलैन्ह। मैथिलीक पोथी पर भेटलैन्ह, से जानऽबला कम्मे लोक भेटत। निर्विवाद अछि जे बेसी लोक हुनका हिन्दि एक लेखकक रूप मे जनै छैन्ह।

पुरस्कार त साहित्य-अकादमीक एकटा पक्ष अछि। मुदा यैहटा एकटा पक्ष नहि अछि। (मैथिलीक लेल अखन धरि एतबे छैक, से कहि सकैत छी !) मूलतः एकादमी भारतीय-साहित्यक विकासक लेल काज कैनिहार संस्था अछि, जकर उद्देश्य छैक उच्च साहित्यिक प्रतिमान स्थापित कैनाइ। विविध भारतीय-भाषा मे होबऽ बला साहित्यिक कार्यकेँ अग्रसर कैनाइ तथा तकर समन्वय द्वारा देशक सांस्कृतिक एकताक उन्नयन कैनाइ। भारतीय लेखक भाषा आ लिपिक चहरदेवारी केँ टपि कऽ एक दोसरसँ अधिकाधिक परिचय प्राप्त करय, आ भारतीय पाठक देशक साहित्यिक विविधता तथा अनेकरूपताक अधिकाधिक रस ग्रहण कऽ सकय, ताहि दिशामे काज कैनाइ साहित्य-अकादमीक घोषित

उद्देश्य छैक । अकादमी एहि लेल कय तरहक काज कैयो रहल अछि । मुदा एहि समस्त कार्यक्रम मे मैथिली कतऽ अछि, से इजोत लऽ कऽ देखबाक विषय थिक ।

साहित्य अकादमी भारतीय भाषा मे १९५३ धरि प्रकाशित ग्रन्थक एकटा सम्पूर्ण सूची तैयार कऽ रहल अछि । एकर दूटा खण्ड प्रकाशित भऽ चुकल अछि आ तेसर प्रकाशन लेल तैयार अछि । तीनू खण्ड मिलाकऽ अखन धरि बंगला, असमिया, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, अंग्रेजी तथा संस्कृतक सूची निकलि चुकल अछि । मैथिली क भाँज कहिया औतैक ?

अकादमी द्वारा प्रकाशित 'भारतीय साहित्यकार परिचय' नामक बृहत् संकलन मे मैथिलीक प्रश्न त एहि द्वारे नहि उठय जे ई ग्रन्थ १९६१ मे प्रकाशित भऽ चुकल रहैक, जाहि समय मे मैथिलीक प्रतिनिधित्व नहि छल एकर संशोधित-परिवर्धित संस्करणक काज हाथ मे लऽ लेल गेल छैक, मुदा पता नहि मैथिली एहिमे सम्मिलित कैल जा रहल अछि वा नहि ।

'कंटेम्परेरी इन्डियन लिटरेचर' मे, जाहि मे विभिन्न भाषाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक संग साम्प्रतिक साहित्यक सिंहावलोकन सम्बन्धित भाषाक अधिकारी विद्वान द्वारा कैल गेल अछि, मैथिली एहि द्वारे नहि आबि सकैत छल जे एहि मे सोलहेटा प्रमुख भाषा लेल गेल छल, आ ईहो ग्रन्थ बहुत पूर्ण प्रकाशित भऽ चुकल छल । मुदा ई त भैए सकैत छल, जे हिन्दी, कन्नड़, तमिष, तेलुगु, मराठी आ मलयालम जकां मैथिलियो मे एकर अनुवादक व्यवस्था कैल जाइत ।

विभिन्न भारतीय भाषामे उपलब्ध साहित्यक प्रामाणिक इतिहास प्रकाशित कऽ अकादमी बड़ महत्वपूर्ण काज क रहल अछि । भारतक सऽभ भाषामे ई इतिहास अनूदित करबाक योजना छैक । बंगला, असमिया, उड़िया, तेलुगु तथा सिन्धी साहित्यक इतिहास अंग्रेजीमे; कन्नड़ साहित्यक इतिहास कन्नड़मे; तथा मलयालम साहित्यक इतिहास मलयालममे प्रकाशित भऽ चुकल छैक । बंगला साहित्यक इतिहासक अनुवाद बंगला, कन्नड़, मलयालम तथा (आगाँ पृष्ठ १८२ पर)

आधुनिक मैथिली कविताक भूमिका

प्रो० श्रीशंकरसोम

“मिथिलाक नगरीयविकास एखनधरि अविकसित अवस्थामे अछि । आर स्नातन सौंदर्यसँ विभूषित एहि भूमिखंडक आत्मा अपन समस्त शोभा आ’ सुषमा नेने ग्रामवास क रहल अछि । एकदिस सामाजिक अनाचारसँ करुणक्रंदन आर दोसरदिस हरित-भरित शस्यश्यामला धरती आ’ निश्छल अपनामे बिसरल-विस्मृत लोकवेद ।”

.....“जाहि तरहें संस्कृत-साहित्यमे ‘वसंत’ बंगला-साहित्यमे ‘पावस’ आर आंग्ल-साहित्यमे ‘शरद्’क चित्रण अपूर्व भेल अछि, मैथिलीक आधुनिक कवितामे बाढ़ि, बरखा आ’ अगहनक चित्र कोनो देशखंडक पाठककेर नयनमे खन नोर, खन पुलक आनि सकैछ ।”

संघर्षोन्मुख आधुनिक मैथिली कविताक एहि भूमिकाक प्रथम अंश अप्रैल’ ७१ केर अंकमे छपल अछि, अंतिम अंशक सङ ई निबंध एहि अंकमे समाप्त भै रहल अछि ।

(शेषांश अप्रैल '७१ अंककेर)

ग. शोषकवर्गक सव्यंगभर्त्सना

शोषकसमुदायक द्वारा सर्वहाराक करेजपर बैसब, ओकर रक्तचूसि जोंकजकाँ मोट बनब, परश्रमजीवी ओकर हृदयहीन मनोवृत्तिक विरुद्ध शोषितक पक्ष धर कवि सभतरहसँ भर्त्सना करैत छथि । कोनो तरहक अत्याचारक पोल खोलिकै व्यंगकाणसँ चलनीकै देवालै तत्पर प्रगतिशील मैथिली कवि कोनो प्रकारक शोषणक प्रवृत्तिक विरुद्ध लोहालेवालै उत्सुक छथि । हिनका अपन शक्तिपर पूर्ण आस्था छनि, आर विश्वास छनि जे अजुका महाजन आर महाशयक शोषक व्यक्तित्व काल्हि जाकै सामान्य जनसमुद्रमे समाहित भऽ जाएत ।

कहबओता अजुका महाराज
केवल कामेश्वरसिंह काल्हि
हमरालोकनि जे खाइत छी
खएताह ओहो से भात दालि
आ दोसर दिस

पढ़ता गुनता करताह पास
जूगल कामति छीतन खवास —यात्री

उच्चवर्गक प्रतिष्ठा कोनो आदिकालसँ नहि अछि । चतुरता आर बलसँ ई लोथ शुम्भी महादेव बनल पुजा रहल छथि :

बलवान हाथक बलसँ
बैसल छलह तों सराइ पर !
बनिगेलह अछि पूज्य
पाबैत छह धूपदीप नैवेद
कबुलापाती सेहो पबैत छह....

एहेन माटिक महादेव (प्रतीक रूपमे व्यवहृत) जकर पेट हाथीजकाँ बड़ पैघ छनि, आर अपन धाख-बल-बूतें जमौने छथि, हुनक आँखिमे आंगुर करैत कवि कहैत छथि :

...हे माटिक महादेव !
नहि करह कनेको अहंकार

जखनहि हेतह विसर्जन लगतह सभ वोकिआवए
 हैं जाधरि अक्षत चानन फूल
 पदक, किछु चेन्ह रहतह लागल
 लतमर्दनसं रहि सकैत छह बाँचल
 किन्तु निष्पक्ष परीक्षक कालक प्रभावसं
 पाबि न सकबह त्राण
 झड़ि धोखरि जेतह सभ चेन्ह ! —किरण

आर तखन निशानीस्वरूप की बचतह ? 'केवल—पद सत्कार !'
 एहि तरहें किरणजी सामंतशाहीक आधारशिलापर प्रतिष्ठित पूँजीपतिक
 थुम्हीकेँ प्राणवंत भऽ जनगणमे मिजहर भऽ जेवाक प्रेरणा दैत छथिन, जाहि
 रस्ता पर नहि गेने हुनका सभक की दशा हेतनि, तकर भान भऽ जान्हि ।

ई शोषकसमुदाय अपना मे संघबद्ध भऽ रहैत होथि, आर सभ एक-
 दोसरकेँ सम्मान दैत होथि, से नहि । बड़ माछ जाहि तरहें छोट माछकेँ
 गीरि जेवाक अवसर तकैत रहैत अछि, ताहि तरहें बड़का शोषक छोटका
 शोषककेँ गीरि जेवाक अवसर तकैत रहैत अछि । छोटका शोषकवर्ग वा
 हुनकासभक संचालित-यंत्रक अधिकारीगण बड़े टीपटापसँ सर्वसाधारणक घेंटपर
 अपन चोंच पिजबैत रहैत छथि, तथापि अपन "बौस" क (मालिक) आगाँ
 नाङरि सटका लैत छथि, एहेन पंचमांगीक तुलना मैथिलीक आधुनिक कविताक
 सर्वश्रेष्ठ प्रतीकव्यांग्यकार (कार्टूनकाव्यकार) कवि तंत्रनाथझाक शब्दमे :

जकर प्रहारे अहँक डेन टूटि जाएत
 जकरा आघाते भग्न होएत

मूसर सन लोल

तनिका आगाँ अहाँकेँ नहि फूटै अछि बोल ।

हुनक दृष्टिपथक शेषहुँ पड़ितहि

समेटि अहाँ लइ छी अपन चार सनक डेन

नवक आँक (६ सन बनाए लै छी तारसनक घेंच...

—तंत्रनाथझा

एहि नगरे शोषक आंतरिकरूपके स्पष्टके, सर्वहारा वर्गक निम्नस्थिति मोडि उच्चवर्गक निर्माण के ओकरा आर संघर्षशील ओ निर्भय सनायक कविक प्रेष्य छनि ।

सर्वहारावर्गके उच्चवर्ग बड़ निम्नदृष्टिसँ देखीछ । अपन दरवारी ढंगक लोचके छोड़िकै :

आर सभटा धूह आ' बकलोल
हाथमे झंडा, गरामे ढोल

(जे कने लुङ्गिर तनिक !) —सोमदेव

चादुकारक उपर्युक्त व्यक्तित्वक बलपर पूँजीवारी समुदाय अप्रत्यक्षरूपे शासनकेर बागडोर अपन हाथ मे राखि बजार ओ उत्पादन पर अपन एकाधिकार प्राप्त करवाक प्रयास करैत अछि । सेवक ओ नेताक देशमे एहि तरहक चादुकार लोकनिक दलक टरटरके देखि कवि कूट करैत छथि :

ई अजगुत कोन पुरनके सभटा ढंग छै !

कमसँ कम सभ देशी अछि तँ
उजरावस्त्र स्वदेशी अछि तँ
गनले गूथल भोग करौ
तइयो पहिने साँ वेशी अछि तँ

दूझि लियऽ जे बाँचल एक अलंग छै ! —अमर

अपनासँ तुलना करैत उच्चवर्गक प्रति प्रस्तुत निम्न मुक्तक अपन साहित्यिक गुणसम्पन्नतालै कोनो भाखाक अमर काव्यखंड भऽ सकैछ :

हुनक मुखाकृति छनि प्रसन्न दीपित अहिवात जकाँ
हमर कोढ़ मुल थरथर कँपइछ करड़ीक पात जकाँ
हम उदास हथियामे झपसी लाधल प्रात जकाँ
ओ सिंहकइ छथि मूदा वसंतक मधुर वसात जकाँ —यात्री

लेनिन धर्मके हफीमक विशेषण देलनिए । उच्च समुदायक सङ्घ धर्मधर्मांध साम्प्रदायिक ठीकेदारलोकनि निम्नवर्गके संस्कार-मंदिर मे प्रवेश नहि करय दैत छथि—से मंदिर दिस प्रयाण करैत अछूत दलक नेतृत्व महर्षि

बिनोवा कियए नहि कै रहल होथि ?

पकइए धर्मक मांस भात, चढ़ल अछि धर्मक हंडा
(आइ, ने त काल्हि फूटत सभ भण्डा !)
चलु पाछू पाछू सुनम्र भै, नजि त मारि देत डंडा
बैद्यनाथक पंडा !! —राजकमलचौधरी

काराबद्ध एहेन देवतोक उपेक्षा करय मे कविकेँ हिचक नहि छनि ।
एहेन स्थूल प्रस्तरपिंडक प्रहारपूजा करैत हास्य-व्यंग्य-परिहासकार कवि
हरिमोहनझा 'बुढ़ानाथ' महादेवकेँ कहैत छथि—

हे जीर्ण शीर्ण पचकल पाथर
सरिपहुँ छी पाथर अहां भेल....
पथरायल तीनू आँखि आव
तैं ज्ञाम गुड़ै छी चुप वैसल
किछु सकक लगे अछि जौं नहि लऽ
व्यर्थ गाड़ल छी एहिठाम
वहराउ काज लोढ़ाक दियह
खट्टर काका पिसताह भांग । हरिमोहनझा

समाजक एहि स्थूल पाखंडवादक विरुद्ध लिखनिहार कविसभमे
यात्री, किरण आर हरिमोहनझाक उपमा एक्के शव-परीक्षा मे लागल
तीन टा शलाका साँ देल जा सकैछ । हिनका सभक दुर्दम्यवाणी देशक ढोंगी
प्रदायवादीकेँ जतए छिन्न भिन्न कै दैछ, नवतुरिया-प्रगतिशील राष्ट्रवादी
युवककेँ प्रगति पथ पर विकासक प्रति आस्थाक पाथेय आर विश्वासक अमोघ
अस्त्र प्रदान करैछ ।

घ. दैन्य चित्रण आ' युगस्वर ओ भविष्यदृष्टि :—

वर्गभेद साँ उत्पन्न सामाजिक-गत्यवरोध, आर भ्रष्टाचार, अपराध
आर विषमता साँ उद्भूत गलित दलित चितकाबर समाजक विशद वर्णन
मैथिली-कविताक प्रमुख अंग रहल अछि । मिथिलाक नगरीय-विकास एखन
धरि अविकसित अवस्था मे अछि । आर सनातन सौंदर्य सँ विभूषित एहि

सुषमा नेने, ग्रामवास कै रहल
 आँखि । एकहिना साधारणिक अनानार सँ करुणक दन आर दोसर दिस
 हरिन-भरिन डामर उद्यायका करती आ' निश्छल अपना मे विसरल-विस्मृत
 लीकवेड । अलौकिक मिश्रणलके काव्य सर्जित भेल अछि । जतए राजाश्रयी
 कविमोक्षानि कविनाये सौंदर्य ओ निम्नविचरण परम्परागत काव्योक्तिक आधार
 पर होइत छल, — आइ अपन अनुभव आर परीक्षणक आधारपर होइत अछि ।
 आधुनिक कवि वसंत केर प्रशस्ति पर क्षोभ प्रकट करैत छथि :

के बताह कवि भांग पीवि स्वागतवसंत अछि गावि रहल ?

दानव दुहिता सन विशूचिका
 सँहरय मानवकेँ मसूरिका
 धुमसय सन्निपात श्वसनकज्वर
 पिजवय उठि दंतनिकर फणिधर
 नोनचट लुत्ती मच्छड़ उड़ीस
 मानव रिपुदलकेर बनल ईश

मित्रवधक प्रतिशोध लेल घुरि घुरि आबय निश्चय ई खल । —किरण

कविवर किरण कविराजो (बैद) छथि, आर शल्यक्रिया सेहो कै सकैत
 छथि, ई कविता पढ़ि एहन भान भेल । सनातनी 'बताह' कविक काव्योक्तिक
 लीक पीटव कवि किरणकेँ सहाज नहि छनि ! कश्मीरमे आर ब्रजमे भने
 वसंत सुंदर होइत हो, अपना ओहिठाम त पावसे ऋतुराज आ' अगहने
 ऋतुरानी ! बरसैत मेघ, आ' रोपैत धान ! की शोभा ? की आनन्द ?

झम झम झम बरसइ कारीबदरिया

हम रोपी छप छप छप धान

हे बाबा ! —अमर

आर अगहनक आगमनपर बाध-बाधमे पाकल धानक शोभाक आभा
 गुलाब आर बुलबुलक की तुलना ?

चर चाँचर चौरिक आँचरमे

लुबुधल पाकल धान गे ! —मधुर

जेना समतक राज आवि गेल हो, अगहनमे सभक मौनीमे मुरही-लाइ
आ' सबहक मुँहपर मुस्कीक पान देखि कबि गदू गदू भऽ उछैत अछि :

खजनी खएबे जँ पान कने तँ खाले
कतिकहरक सूखल मूह कने चमकाले
अगहनपाहुन नहि आव अधिकदिन रहता

दिन दिन त फेर गरीब देवता सहता — गोविन्दझा

जतए आत्मपरक प्रकृतिचित्रण समाज आ स्थितिसँ पलायनकै केल
जाइत अछि, सामाजिक यथार्थवादी-प्रकृतिचित्रण वास्तविकआवेष्टन रूपमे
उद्दीपन हेतु प्रस्तुत केल जाइत अछि । यह लक्ष्यभेद दूनुकेँ दू खीमा मे कऽ दैछ ।

अपन अजस्रसम्पदा मुक्तहस्तसँ लुटबैत प्रकृतिक दर्शनकै मोन मुग्ध
भऽ जाइत अछि । भरल पेट आ' मुस्कैत नयन ! मुदा, ओहीठाम दोसर दिस
रुद्ररूपमे जखन प्रकृति-नटी शोषक 'गण'क दलबलक सङ दैत नडटे नाचय
लगैत छथि ?

नडटे नाचू कोसी मैया

ता ता थैया ! ता ता थैया ! — यात्री

आक्रोशभरल एहि उपरागमे घृणा नहि, मानव मोनक सनातन सिनेह
भरल छैक । ई उपराग हुनको देल गेलनि-ए जे अपन पेट पीड़ा शांतिक
जोगाड़मे पूव देश चलि गेलाह अछि :

हे ऊधो ! माधोसँ कहबनि अपने गेलाह विदेश
हमरालै दए गेलाह एतय ई भूखमरीक कलेश
कमला बढ़ली, कोसी चढ़ली चलली दौड़ि करेह
बागमतीक बान्हसभ टूटल ऊँच ताड़ सन ढेह
सामा भासल कोदो भासल नहि भेंटैत अछि मारु
चलल अनोन बिनुदालिक दिनकतेक रिलीफक चारु — आरसीप्र०सिंह

कोसी पीड़ित मिथिलाक एतेक स्पष्ट चित्र कतए भेटत ? प्रसाद गुण
आ' तादात्म्य आरसीप्र०सिंहक अपन विशेषता छनि । हिनक बंधनमुक्त
लेखन मैथिलीकेँ सम्पन्न करैत आयल अछि ।

विषमता-जनित मानव प्रकृतिक दुराचारलीलाक भयंकर बाढ़िकेर
रूपक मे शेखरजी असुर-प्रवृत्तिक चक्रचालिक भंडाफोड़ कयलनि अछि । हिनक
सादगी आर व्यंग्य हिनका जनकवि बना दैछ :

भौतिकताक विकास बाढ़िमे इच्छा नडटे नाच नचैये

प्रतिद्वन्दिता-लहरि लहरैये

भेदभाव झंडा फहरैये

स्वार्थ मृतककेर आगां पाछां बटुआ टोवि सहर्ष हँसैये

गुट्ट नावकेँ फोड़ि रहलछै

जाति-जड़िकेँ कोड़ि रहलछै

राजनीति तऽ ऊँच मचानक तऽरे तऽर फटाव करैये —सुधांशुशेखरचौधरी

जहिना आनन्दकरूपमे अगहन तहिना विषादकरूपमे बाढ़िक विनाश-
लीला मिथिलाक जीवनधारा पर आलोड़ित-प्रत्यालोड़ित होइत रहल अछि :

जलमे एहेन माहुर घोरल जमइछ सौंसे कजरी

पड़ा न होइछ विषधर बैसल फेंच काढ़िकै देहरी

....सौंसे घरमे ठूकए लागल लागल सबकेँ घिगही

मरइक पहिनहि पेट फूलिकै डीह जकाँ भै गेल !

कहियो ने हौ भोलाबाबा, एहेन पीड़ा भेल !!—चन्द्रभानुसिंह

तथा

ऊपर वरसइ मेघ निचासँ कोसिक पानिक जोर

आर मध्यमे वरसि रहल जनमनक नयनसँ नोर

सड़क बान्ह सभ टूटल घरमे खलखल बहइछ रेत

नावेसँ अछि हाथ पयर से के घरघरमे देत ? —दिनेश्वरलाल 'आनंद'

कोसी सम्बद्ध कवितासभ अपन मौलिकता आर अनुभूत-चित्रणलै
भारतीय काव्यसाहित्यक अमूल्य निधिक रूपमे सम्मानित होएत, से दिन
दूर नहि ।

जाहि तरहें संस्कृत-साहित्यमे 'बसंत', बंगलासाहित्यमे 'पावस' आर
आंग्लसाहित्यमे 'शरद' चित्रण अपूर्व भेल अछि, मैथिलीक आधुनिक कवितामे

बाढ़ि, बरखा आ' अगहनक चित्र कोनो देशखंडक पाठक केर नयनमे खन नोर,
खन पुलक आनि सकैत अछि। ओना आनो ऋतुसचहिक उपेक्षा नहि भेल अछि।

प्रकृतिकेँ बान्हि सकवामे असमर्थ दरिद्रसमाज लै गर्मी ऊकनेने अवैछ।
घाममे कोनो काज कोना हो ? आर बिनु बरखें रोपनी कथीक ?

खापड़िमे अछि बालु धिपाकऽ रखनें प्रकृति कनुनिजा

धानी दऽ पछवा लाड़निसँ उलवय सौंसे दुनिजा —रामदेवज्ञा

प्रकृतिक कोड़सँ विलग भै शोषित समाजक दैन्य चित्रण करवाक वास्ते
आधुनिक मैथिली कविगण स्पष्टि आर व्यंग्य केँ साधनरूपेँ प्रयुक्त कयलनि
अछि।

भारतीय राजनीतिमे उपेक्षित मिथिलाक आर्थिक ओ सामाजिक दशा
औखन नहि सुधरि सकल अछि।

एखनहुँ धरि बिस्पी आंगनमे मिथिला बहबथि नोर

कविता मिलित कंठसँ गबइछ 'हमर दुखक नहि ओर' —सुमन

कविक नोर कोनो कातर प्राणीक नोर नहि अछि, ओ समष्टि 'नोर' लै
कानि रहल अछि — ई माँ मिथिलाक नोर अछि। ओकर स्वर युगक स्वर।
मैथ्यूआर्नाल्ड केर कथन कि कविता जीवनक प्रतिछवि (मिरर) अछि ओकर
कवितामे स्पष्टतः परिलक्षित होइछ। 'एहि प्रतिछवि मे हम मैथिलीक आधु-
निक कवि केँ उत्पीड़ित किन्तु बाधाक बन्हिसँ लड़ैत देखैत छी :

जड़ जीर्ण शीर्ण जगती जहाज युगनिधिमे हो द्रुतगामी

तैं विकट विघ्न बाधाक बन्हि मे दी तन कोयला नामी

जनकंठक चिमनीसँ परन्तु बनि भाप उड़ैत रहैछी

अपने दारुण दुखसँ सदिखन चुपचाप कनैत रहैछी। -- मधुप

अपनहि क्रांतिक शंखटा फूकिकै कवि शांत नहि भै जाइत छथि,
शोषित मजूर-किसान केँ महत्ता आर प्रबोधन दै आस्था आर विश्वासो प्रकट
करैत छथि :

धरती सुत ! अहींक कवितासँ हरित भरित संसार

गढ़ आखर दस पाँच धन्य कवि कहवी अहाँ गमार

जे अणु गढ़ि विध्वस्त करथि जग धन्य हुनक विज्ञान
कण कण आविष्कार जीव हित अहिक तिरस्कृत ज्ञान —सुमन
तथा—

देह सूखल, डार भूकल, किन्तु दृगमे तेज
चिर प्रगतिमय शांति पावए मात्र मृत्युक सेज
अन्न लै अगहन अबै अछि, फूल लै मधुमास
जकर जीवनसँ झरय नित विमल दिव्य-प्रकाश

व्यथा सीमाहीन

किन्तु हरियर गाम !

युग करै अछि तकर चरणक

शत सहस्र प्रणाम !

बहय स्वेदक विन्दु

किन्तु गति उदाम !

—दुर्गानाथझाश्रीश

आर यात्रीजीक जनवन्दना :

हे कोटि बाहु !

हे कोटि शीर्ष !

हे कोटि चरण !

ऋग्वेदक पुरुष-सूक्तक मोन पाड़ि दैछ, जतए परम पुरुषकेँ एहि
तरहक संज्ञा देल गेल छनि—“सहस्र आँखिवला, सहस्र माथवला, सहस्र
पयरवला !” यात्रीजी आर हुनक युगलै त जनते जनार्दन : से स्थूल-पिंड
नहि, निराकारो नहि, साकार आर गतिमय !

मैथिली कविताक आधुनिक स्वर कोनो बन्धन केँ स्वीकार नहि
करैत अछि, आर मानवक समग्र स्वतन्त्रताक पथ पर अग्रसर अछि ।
कोनो तरहक विषमता आर विभेद सँ एकरा विरोध छैक :

क्यो कुरहरि आर कोदारि कियए

भाँजत आ भुखले रहत कियए ? —हंसराज

एहिपर कौखन क्रुद्धभए कवि अराजकीयतावादीजकाँ बाजि उठैत अछि :

मने होइए हमहुँ ककरो काटि लितअइ घेंट
मुदा होइएपचत नहि ई चलवे करत ग' टेंट ! —हंसराज
ओकरा ककरो आगांमे भूकब स्वीकार नहि—एहि अर्थे ओ
नास्तिके अछि । भूठ आस्तिकता मे ओकरा आस्था नहि :

भुकाबी ने माथ आगूमे ककरो
चढ़ाबी ने पुष्पे कोनो ठाममे हम
बुझलहुँ ने पैघे ककरो कतहु हम
(स्पष्ट कहि दी नास्तिक परम छी !) —धीरेन्द्र

समझौतालौ ओ कथमपि तैयार नहि । कांग्रेस सरकार सुधार
केलक । जमीन्दारी प्रथाक नाश भेल मुदा अफसरशाहीक एकटा नवीन
जमीनदारी कायम भऽ गेल । व्यंग्यकविक बक्र दृष्टि ओहो टेटरके देखि लैछ,
आर समाजवादी नेता सूरजबाबूकेँ टिटकारी दैत कहैछ :

कहाँ गेला सूरजबाबू जमीनदारी छनि ठाढ़
छाल्ही चटैत छनि बी० डी० ओ० बिलाड़ —दाहौड़दास

दाहौड़दास जनकवि छलाह । अक्षरसँ भेंट नहि छलनि । मुदा समाजक
दुख:दर्दक प्रति संघर्षरत एहि जनकविक वाणीमे जे स्पष्टता, व्यंग्य आर
उच्चवर्गक प्रति आक्रोश भेंटैछ, कोनो भाखाक कवितामे दुर्लभ । हिनक
कविता सुनिकै हिन्दीक कबीर आर रूसदेशक सुलेमानदातास्की क मोनभऽ अबैत
अछि ।

‘अल्हुआ-सुथनी समाद’ मे आजुक नेता आर अधिकारी लोकनिक
चित्र उपस्थित कैल गेल अछि :

अल्हुआ कहलक कि सुनगै सुथनी
करनी छोड़िकै रहि गेल कथनी
हेंज बान्हिकै खदरक टर-टर
बगुला मिनिस्टर आ' डोकहर अफसर
कौआ मैना मारए रहि रहि चौताल
एकसौ सतहत्तर पोठी एक्के गाल —दाहौड़दास

देशपर अकाल छाँह पड़ि रहल छल स्वतंत्रताक बाब आर टैक्स बढ़य लागल छल :

बजारमे पसरलइ अमरीकाक चिक्कस

तर मांगइ घूस आ' ऊपर मांगय टिक्कस — दाहौड़दास

नव सभ्यता आर संस्कृतिक पाछाँ भठल जायत नवतुरिया पर बड़ कठोर शब्देन व्यंग कयनिहार कविक छातीमे मात्र हास परिहास नहि, जनताक पाइक प्रति, आँकर पसेनाक प्रति मोह छैक ! सिनेमाक प्रभाव पर एतेक सुन्दर व्यंग्यचित्र पाबि कोनो भाषा धन्य भऽ सकैछ :

ने कोनो धरम करम ने कोनो नेमा

छौड़ा छौड़ी छुतहर भेल देखिकै सिनेमा

अनकर चुम्माचाटी अनकर खेल •

तकर सभटा खरच बरच पबलिक देल — दाहौड़दास

‘खरच बरच पबलिक देल’ मे जे समझदारी आर क्रांतिकारी स्पष्ट-वादिता छैक से अन्यत्र दुर्लभ ।

एहि तरहें सभ तरहक विविधतानेने नऽवकवितामे जतए एकदिश समाज (जीवन ओ आवेष्टन) क यथार्थवादी चित्र भेटैत अछि त’ दोसर दिस क्रांतिक आह्वान । एहि युगक कविकेँ अपना बुद्धि आर संघर्षशक्ति पर पूर्ण आस्था छैक :

बुद्धिबलें खेपइत छी हमरालोकनि

युग हमर आन्हर नहि

शरीरसँ पातर लकलक होइतहुँ

विवेक हमर आन्हर नहि — गोपालजीझागोपेश

एहि बुद्धिवादी संसृतिवादक ई अर्थ नहि जे अपनादेशकोसक प्रतिनिष्ठा कम भऽ जाओक !

निखिल विश्व प्रिय, निखिल भूमि प्रिय

निखिल लोक प्रिय हमरा

तइयो अपने माटिक सौरभ

लए व्याकुल मन-भमरा — यात्री

किछु एहसो कवि जिनका युगक वास्वविकताक ने तऽ सैद्धांतिक परिचय छलनि आ' ने अनुभवजन्य; मात्र भावुक क्रांतिक गायक छलाह— नहु नहु शांत-स्वर भेल जा रहल छथि। कोनो कोनमे बेसि कालक भांग पीसि पीसिकै पीबैत जीवि रहल छथि।

हम हताश नहि, कतहुँ बैसि

संगीत गाबि मन बुझारहल छी। —राघवाचार्यशास्त्री

आत्मस्वीकृति आर आत्मालोचन प्रेरित एहि प्रकारक रचना सभ अपन मात्र भाखाक प्रेममे सहजसमर्पित श्रद्धासुमनक प्रतीक थिक आर मैथिली काव्यसाधनाक प्राणशक्तिक द्योतक।

आधुनिक कविताक स्वरवाहककेँ जनजीवनसँ पलायनकेर निष्ठामय संघर्ष आर साधनाक आवश्यकता अछि। यैह ओकर वस्तुनिष्ठाकेँ भास्वरता आर कलाकेँ शक्ति प्रदान करत।

विधात्मक दिशा :

विधात्मक दृष्टिसँ मैथिली कवितामे नवमोड़ आनयमे यात्री (प्रतीक, मुक्तछंद, व्यंगोक्ति) मधुप (नवलय, अलंकारक जन-प्रयोग, कथात्मकता) आर तंत्रनाथज्ञाक (सॉनेट, अतुकान्त छंद, कार्टूनोक्ति) अग्र-गण्य स्थान हेतनि।

मैथिलीक नऽव कविता एखन अंगरेजी, उर्दू, बंगला आर हिन्दी चारू भाखाक व्यवहृत छंद, अलंकार तथा बिम्बग्राहितासँ स्फूर्तिक आयात कै रहल अछि, आर निधोख भै कहल जा सकैछ कि एहि अर्थे मैथिलीक पुरानो कवि पूर्वाग्रह-पीड़ित नहि छथि नवांकुरक कथे कोन ?

प्रबंधकाव्यक स्थान पर मुक्तक-बहुलता एहियुगक विष्टिता थीक।

छंद :

वार्णिक छंदक प्रभाव प्रायः लुप्त भऽ गेल अछि। सीतारामज्ञा किछु कवित्त लिखलनि-ए। नजि तऽ, मात्रिके छंद केर आर ताहूमे बेसिकै सोरह आर चौदह मात्राक स्वतंत्र ओ मिश्रित छंदप्रयोग बेसी भेल अछि। नव

शैलीक लेखनमे मुक्तछंदक प्रयोग दिनानुदिन बढ़िते जा रहल अछि । यात्रीजीक अनुसार मुक्तछंद दू ढवसँ गढ़ल जाइछ—१. गुंफित आर २. अगुंफित । लय आर स्थित्यनुसार स्वर आर लयसँ आंतरिकरूपेँ गाँथल मुक्तछंद 'गुंफित' कहल जाओत आर गद्यात्मक 'अगुंफित' ।

गुंफित: तुककप्रयोग— हरकेर लागन धयने
अछि घुमारहल चक्का मजूर
मुद्दइकेर छाती आव करव हम चूर चूर
—केदारनाथलाभ

स्थिति-अनुकूल— जीर्ण केचुआ
शीर्णवर्णकेर छौड़ि
नव उमंगमे, नव तरंगमे, मातल
आयल नवका वर्ण, जनु नवभुजंग —धीरेन्द्र

लययुक्त— बस एक बेरि अस्फुट क्रंदन
शिशुसंगहि बुचनिक मुक्तसृष्टि !
सविषाद हासमे चन्द्रमाक
ओ घसल अठन्नी बाजि उठल
हम कतै जाउ
अवलंब पाउ ?
के शरण
घसल जनिकर अदृष्टि ! —मधुप

अगुंफित: कसल— हम मनुक्ख छी, स्मरण अछि एखनहु धरि
भीजल नयन, सुखायल रक्तअधरक एकटा चेहरा
एकटा अभागलि नारी, जकरा पक्षमे नजिए कोनो तर्क -
—राजकमलचौधरी

छितरल— ट्रेन चलइछ
फूल मरिकै ठाढ़ अछि
मनियार साँप ससरइछ कते

आ'

केहेन ई सायरनक स्वर

सपन बम....

'जागह ! मोकामा आवि गेल !! —सोमदेव

आधुनिक मैथिली कविता अपन छंद विधान लै जतए एक दिश
लोकशैलीसँ प्रेरणाग्रहण कयलक अछि, ओहीठाम पाश्चात्य सर्वलोकप्रिय
अमरीकी जाज संगीतक राँक-एन-रॉलक प्रयोग सेहो ओकरा बजित नहि !

राँक-एन-रॉल-दुनियाँ की जाने

प्रीतप्यास माने

गंध गंध केलिकुंज कार —सोमदेव

अलंकार :

प्राचीन अलंकार सभमे उपमा, रूपक आर उत्प्रेक्षाक प्रयोग खूब भेल
अछि, आर मानवीयकरण, विशेषण ओ क्रिया-विपर्यय, ध्वन्यंकन प्रतिचित्र
प्रतीक आदिक प्रयोग नैसर्गिक रूपसँ नऽव अलंकार रूपेँ भेल अछि । ई सभटा
प्रयोग अभिव्यक्तिक मार्गमे भेल अछि, शृंगारकक्षमे शीशाक आगाँ बैसिकै अपन
भापर तृप्त हेबा लै नहि । उपर्युक्त अलंकार सभक अतिरिक्त श्लेष यमक
आर अनुप्रासक झंकार-बहुल मधुपक अपन गुंजार-वैशिष्ट्य छनि । अप्रस्तुत
(उपमान) रूपमे नव-नव प्रतीकक प्रयोग एहि युगक दिशा विस्तार कै दैछ ।

उपमा— नहूँ नहूँ बाबी जकाँ गंगाजी चलैत छथि....

बस जकाँ धड़फरायल आवि गेल अछि बसंत

काल गनगोआरि जकाँ आगाँ ससरैत अछि ।

— हरिमोहनझा

उत्प्रेक्षा-- टनटन टन टन बाजथि कनिजा सेदल ढोल जकाँ

देखऽमे महकारी प्रकृतिक कब-कब ओल जकाँ —यात्री

अथवा

उड़ैत अछि चुमकी परबा

टीनक अकासमे राँगा जौं टीपल

तामाकेर आँचर पर निहुड़ल : कौड़ीकेर गाछ !

—रमानन्दरेणु

रूपक—

जड़जीर्णशीर्ण जगती-जहाज युगनिधिमे हो द्रुतगामी
तैं विकट बिघ्न बाधाक बन्हिमे दी तनकोयला नामी

—मधुप

पाबि पछवा मुधुर सिंहकी, उठ सिनेहक सिंधुरे
रातिरतिमे निरत दुर्वापर पसी श्रमविन्दु रे (शरदप्रिया)

—सुधांशुशेखरचौधरी

समय मुर्गीकसङ आबि रहल चुनचुन करैत
नवका सालक जानवर, नहि जनवरीक चूजा

—रामकृष्णझाकिसुन

मानवीयकरण-जागल छी, कती राति बीतल अछि

ज्ञात ने होइए किछुओ

रूसल प्रिया जकाँ तजि करू मान-अभिमान

चान हे, आवऽ लालटेन बदलामे दान दएह किछु ज्योति

राजकमलचौधरी

आजुक ई पछवा बसात

कै रहल अछि झिक्काझोरी

हमरा बहुक आँचरक संग... —हंसराज

विशेषण ओ क्रिया-विपर्याय—

तीव्र विषाक्त विलक्षण गंधी बेबी आष्टिन ! —यात्री

छिछल्य छाँह अनाड़ी बरिसय आँचर भीजल....

—रमानंदरेणु

ध्वन्यंकन—आन्हर जिनगी सेहंताक ठेँगासँ थाहए

वाट घाट आँतर पातर केँ

खुट् खुट् खुट् खुट् —यात्री

प्रेसकरय धाँइ धाँइ

रे डयो गुँगुआइ —मणिपद्म

प्रतिचित्र—टिनही थारी मे काढ़ल छल, अति लाल लाल गम्हड़ीक भात
—गोपालजीझागोपेश

आयल एकटा मोटरगाड़ी
पो—पो—पो—पो
भड़कल गदहा
गड़कल छौड़ा
सड़कक खत्ताबीच

—गोविन्दझा

हरियर डाली, पीयर फूल
तइतर नागिन, भुलुआ झूल

(नैनाबोगिन, मित्तिचित्रक प्रतिचित्र) —मणिपद्म

प्रतीक जाड़क डर सँ बनबऽलै सीरक तुनने अछि के ई कुहेस
नवयुग : पछवा गोठुल्लामे गोबरसँ गोतल पचपच करइए निङहेस
देहक अगिन त' भफायलए मुँहदै
मुरछइछ किरिनक कमान !
केहेन बिहान भैया, केहेन बिहान ?
एहेन बिहान भैया, एहेन बिहान ! —सोमदेव

अन्योक्ति : बुढ़वा सुग्गा
देह हिलाबए
चंचु पिजाबए
उड़ि गेलइए रोइयाँ पाँखिक
ताहू पर सेखीक अन्त नहि । —यात्री

कार्टूनोक्ति : ई थीक रजगृद्धक जेर
सैह खसल मृतप्राय गायपर
मुइल जन्तु मात्रक माँस एकरा हविष्य थीक ...

—तन्त्रनाथझा

उपसंहार

आधुनिक मैथिली कविताक मुख्य प्रवृत्ति (१) बहिरंगसँ मुक्तक आर

१७६। वैदेही '७१

जीवन-जागरणा

श्री मार्कण्डेयप्रवासी

बहुत सुतलेँ जाग, जीवन ! बहुत सुतलेँ जाग !!
तोँ हमर देवता हम तोहर पुजारी
आमरण संकल्प अछि, करबौ' पुछारी
दूर नहि तोँ भाग, जीवन ! बहुत सुतलेँ जाग !!
नव प्रभातक उष्णतामे नयन-सम्पुट खोल
क्षुधित-कुण्ठित, तृषित तन-मन करै'छौ'कल्लोल
अलस-तन्द्रा त्याग, जीवन ! बहुत सुतलेँ जाग !!
छौ' समाजक शक्ति-सम्पद्-केन्द्र सव उदण्ड
काज नहि चलतौक भँजने बिनु अपन भुज-दण्ड
बान्ह साठा पाग, जीवन ! बहुत सुतलेँ जाग !!

उपसम्पादक—आयावर्त्ति, पटना]

उज्जर रंग

जोजे कवैरिन्हा

मृत छी वा जीवित
ओ बीज हमरामे अछि
हमर हाड़क उज्जरपनमे
हमर हाड़क
एहि अनिवार्य श्वेततापर
अपनेलोकनि नहि खौंझाउ
बन्धु हमर, हमरा क्षमा करू !
हम की करू
हमरे हाड़क नहि
सभक हाड़क रंग उज्जरे होइत छैक ।

(निग्रो कविता)

श्रीपूर्णन्दुकुमारचौधरी द्वारा रूपांतरित]

सहरसा, दुपहर राति | श्रीसुभाषचंद्रयादव

एहि शहरकेँ लड़की छैक । डी० बी० रोड पर हाई-स्कूल जाइत लड़की..... कालेज जाइत लड़की । सुभाष कनेक खुश होइत अछि । महा-प्रकाशक भाव ओकर करिया फ्रेमक चश्मामे हेराय जाइत छैक । सुकान्त निरपेक्ष रहैत अछि । एहिना जाइत रहैत छैक छौंड़ीसभ । की देखल जाय : कोनो रुचि नहि । ओकरा चाही सिगरेटार ... लाल-लाल डंटीवाला फूल । ओहन राति नहि भेटैत छैक सहरसामे । ओ भोरकेँ मुरझायल फूल उठनैत अछि । मुदा एखनो ओहिमे सौंदर्य छैक ।

सुभाष कोनो छौंड़ीक पीठपर जरैत सिगरेटक टुकड़ी फेकय चाहैत अछि । महाप्रकाश सड़कक कात थूक फेकैत अछि आ सुकान्तक ठोरपर एकटा मुस्की आवि जाइत छैक । हमसभ सोचैत छी जे उन्नैससँ ऊपरवालाकेँ गोली मारि दी । मुदा, एहि शहरक जनसंख्या एखन ओतेक बेबदाश्त नहि भेल छैक । हमसभ रातिमे निरोधक फुकना बननैत छी आ हँसैत छी ।

सुकान्त शहरक भीड़सँ भागय चाहैत अछि । सुभाष निर्णयहीन अछि—शहरक भीड़ आ एकान्त । महाप्रकाशकेँ ओतेक सोचय नहि पड़ैत छैक । एकटा रिक्शा वा टमटम रातिकेँ दस बजे अनैत छैक आ ओ शहरक इजोतसँ दूर अन्हारमे गुम भऽ जाइत अछि । सुकान्त आ सुभाष कोनो उदास फिल्म-गीत गुनगुननैत फेर भीड़दिस बढ़य लगैत अछि । महावीर-चौक धरि अनैत, दूरेसँ एकटा रिकार्ड सुनाइ पड़ैत छैक —हो राजा जानी ... होय होय राजा जानी । दुनू गोटयकेँ हँसी लगैत छैक । सोचैत अछि महाप्रकाशक एकटा पैरोडी—जल गई खिचड़ी, फूटगई हाँड़ी..... भरने गई थी पानी ... हो राजा जानी ।

ई शहर अपसूयांत रहैत छैक । भागाभागीक एकटा रूटीन्ड लाइफमे । दिनभरिक हो-हल्लाक बाद दुपहर रातिके स्टेशन ओंघाय लगैत छैक । रोडपर चलैत सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्तके हाफी होइत छैक ।

रेलवे-क्रासिंगलग एकटा चाहक दोकान छैक ।

कोनो कथा भऽ सकैछ ... कविता ? सुभाष बेंचपर बैसैत पूछैत छैक ।

महाप्रकाश पूबदिस तकैत अछि जतय भिखमंगासभक मूनल आँखिपर आसमान ठहरि गेल छैक आ ओकरा भीतर अपन देश डूबय लगैत छैक ।

सुकान्त चाहवालाक चेहरापर एकटा दूरी नपैत अछि—आज नकद कल उधार । आ सभ सोचैत अछि कथा मरि गेल छैक । लिंग-प्रदर्शन ! सम्मिलित आक्रोश । जतय कवितासँ कोनो चूतिया राजनीतिज्ञ महत्वपूर्ण भऽ जाइत छैक : लिंग-प्रदर्शन गलत प्रशासनक विरुद्ध लिंग-प्रदर्शन आ फेर भागम-भाग । एकटा स्वस्थ दशाकलेल सुभाष, सुकान्त आ महाप्रकाशक स्वस्थताक लेल एकान्त इजोरिया आ पियास ।

हमसभ शहरक सामान्य गतिमे कोनो बाधा नहि दैत छियैक । आँखि अछि; देखैत छियैक । उत्तर-दक्षिण दिशामे दौड़ैत रेलक पटरी पर बैसल एक दोसराक दिस पाथर फेकैत रहैत छी । ई भेल आदिम मनुक्खक प्रवृत्ति । एक मित्र । मुदा हमसभ आदिम मनुक्ख नहि बनय चाहैत छी, ने बनजारा सनक लाइफ । एहि शहरमे ई सभ सम्भव नहि छैक । रेलवे-वेटिंग-रूममे सूतल बनजाराक व्यक्तिगत जीवनमे ई शहर हस्तक्षेप कऽ देने छैक । एकटा मौगी चिकरैत रहैक भीड़केँ चीरैत—लोक अपन साँइयो-बेटा लग नहि सूति सकैत अछि ? तोराआर किएक घेरने छह । आ ओ गारि पढ़ैत रहैक । एहीठाम कतेको खूबसूरत जबान लड़कीक देह पटरी बनि जाइत छैक । जकरा सुरक्षाकलेल भेजल गेल रेल पुलिसक असंख्य डिब्बा थकुचैत रहैत छैक ।

हमरासभकेँ चर्च लग पुलिस पकड़ि लैत अछि । मात्र एहीलेल जे हमसभ रातिकेँ घूमैत छी । पुलिस दलील दऽ सकैछ—कहेंगे कुछ तो कहि-एगा खचरई बतियाता है । भई कैसे समझेंगे कि आपलोग भलेआदमी हैं ? पहनावे से क्या फरक पड़ता है आदमी में ।

(आगाँ पृष्ठ १८१ पर)

चौबटिया पर

प्रो० श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'

॥ १ ॥

कोनो रिजापर आब हमरा विसवास नहि रहल
जमेत सुहक अयनामे आब अयनाके चीन्हि नहि पवेत छी
किबेक त हमर अकासमे
हनीसुनक ताराक स्थानपर चिनगी फिट कए देल गेल अछि
आर नीचाँ लोहाक काँट ओछा देल गेल अछि ।

॥ २ ॥

सूर्य नित्य उगल करैछ नव-नव मुखड़ा लगाकऽ
आर बेचि लैछ ई मुखड़ा
ठाढ़े-ठाढ़ दुपहरिक टहाटही रौदमे
जखन हमर दिवसधरि भए गेल निलाम
तखन की चिन्ता करी एहि मुखड़ाक
जे प्रत्येकदिन जुलूसक पाछाँ ओहिना हेरा जाइछ
आर हम पुनः एकटा नवमुखड़ा पहिरिकए आगाँ भऽ जाइत छी ।

॥ ३ ॥

हम ई नहि जानय चाहैत छी जे अहाँ हमरालेल कब्र खूनि लेलहुँ-ए
मात्र एतवे जनैत छी जे एकटा लहास समर्पित करय आयल छी
ओकर बुट्टी-बुट्टी नोंचिकए
कबाब बना लियह
अथवा
कूकुरक दलक आगाँ सोझे सड़कपर फेकि दियह ।

म० मोरङ कालेज, विराटनगर (नेपाल)

किछु अविस्मरणीय सूत्र

श्रीराजवल्लभप्रसादसिंह 'राठौर'

- कतौ यात्रा करवाक पहिने, ई चेक कऽ लेवाक चाही, जे पैजामा आ फूलपैन्ट मे सभटा बुटाम अछि, कि नञि ?
- सासुरमे चाह आ दूध पीवाक पहिने, ई देखि लेवाक चाही, जे चाहक स्थान मे माँड़ आ दूधक स्थानमे चौरठि तऽ नञि अछि ?
- याचना-सम्बन्धी कोनो आवेदन-पत्र प्रस्तुत करवाक पहिने, हाकिमक दाम्पत्य मतभेद आ मूडक ठीक-ठीक पता लगा लेवाक चाही ।
- सासुर सँ विदा होएवा काल, विदाइकेर डालीमे, ई देखि लेवाक चाही, जे सासुर ऐवामे लागत-व्यय, विदायमे भेटि रहल अछि अथवा नञि ?
- प्रत्येक प्रवासीकेँ गाम जैबाकाल, ई मोन पारि लेवाक चाही जे आधुनिक श्रीमतीजीक लेल, संगमे कोनो उपहार, जा रहल अछि, अथवा नञि ?
- होटलमे भोजन करवाक पहिने, ई टेब लेवाक चाही जे बगुलीमे कैचा अछि अथवा नञि ?
- लाटफारमपर औंघी टूटलाक पश्चात् आ रेलमे चढ़वाक पहिने ई पता लगा लेवाक चाही जे सोनपुरक बदलामे कटिहार तऽ नञि जा रहल छी ?

बखरी बाजार (मुंगेर)

(पृष्ठ १७६ केर वाँचल)

सुभाष, सुकान्त आ महाप्रकाश एक दोसराक चेहरा देखय लगैत अछि । की फर्क पड़ैत छैक पहनावासँ ? की फर्क पड़ैत छैक शांतिरक्षक पुलिसमे आ कोनो लड़कीकेँ पटरी बना देबवाला पुलिसमे । हमरा सभक आगाँ सलीब ठाढ़ भऽ जाइत अछि । बहुतरास सलीब आ सलीब पर टोकल ईसामसीह । हमरासभ कतय छी ? ग्रेव यार्डमे । श्मशानमे । कब्रगाहमे । कतय छी हमसभ ? —भई थाना चलना होगा । पुलिस चिचिआइत अछि ।

करिहो सहरसा]

मैथिली के अने लेखक । भारतीय साहित्यक इतिहासक अंग्रेजी, हिन्दी तथा
मैथिली साहित्यक इतिहास के अने लेखक । मैथिली साहित्यक इतिहास के
अने लेखक अछि, आ ने अने भारतीय साहित्यक इतिहास मैथिलीमे अनूदित
अछि ।

'भारतीय-साहित्यक निर्माता' नामक अंग्रेजी ग्रन्थमालाक अन्तर्गत
भारतीय-साहित्यक इतिहासक प्रमुख साहित्यकारक जीवन आ कृतित्वक परिचय
प्रकाशित भेल अछि । एखन धरि एहिमे कबीर, गालिब, मीराबाई, नामदेव, राम-
मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि पर पुस्तक प्रकाशित भऽ चुकल अछि ।
औरन अनुवादो अन्य भाषामे छपि चुकल अछि । मुदा एहिमे अखन धरि
विद्यापति के सम्मिलित करबाक आवश्यकता नहि बूझल गेल अछि । आ ने
एहि सभमेसँ एकोटा पुस्तकक मैथिली मे अनुवादे करबाक ।

अकादमीक दिससँ अनेक खण्ड मे भारतीय-भाषासभक प्रतिनिधि
कथाक अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कैल जा रहल अछि । एकर दोसर खण्ड,
जाहि मे १९३० सँ १९५० धरिक अवधिमे प्रकाशित भारतीय-कथाक अनुवाद
समाविष्ट अछि, १९६८ मे प्रकाशित भेल । एहिमे मैथिलीक एकोटा कथा
स्थान पवैत अछि ?

अकादमी प्रमुख भारतीय-भाषा सभक कविताक प्रतिनिधि-संकलन
प्रस्तुत कऽ रहल अछि । एकर तीनटा खंड प्रकाशित भऽ चुकल अछि तथा
तीनटा आर खंड तैयार भऽ रहल अछि । मूल कविताक संग ओकर हिन्दी
अनुवाद से रहतैक । एहिमे मैथिली कविताक प्रतिनिधित्व भेल अछि ?

बहुत रास प्रश्न अछि जे अपन प्रतिनिधिसँ पूछल जा सकैत अछि ।
असमिया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, तमिष, तेलुगु, मलयालम आ पंजाबीक
कविता संग्रह तथा पंजाबी संकलनक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित भऽ चुकल अछि ।
असमिया-काव्य-संकलनक त पाँच टा संस्करण निकलि चुकल अछि । मैथिलीक
संकलन नहि छपि सकैत छल ?

असमिया लोक गीत तथा पंजाबी लोक गीतक संग्रह प्रकाशित भऽ
चुकल अछि । मैथिली मे लोक गीतक कमी अछि ?

गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, सिन्धी, तमिष तथा तेलुगु कथा संग्रह प्रकाशित भऽ चुकल अछि । सिन्धी कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद, तमिष कथा संग्रहक कन्नड़ तथा मलयालम अनुवाद, हिन्दी कथा संग्रहक कन्नड़, मलयालम तथा तमिष अनुवाद; गुजराती कथा संग्रहक तमिष अनुवाद; आ तेलुगु-कथा संग्रहक हिन्दी, कन्नड़ तथा तमिष अनुवाद सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि । एहिमेसँ कतिपय संग्रहक त एकाधिक संस्करण निकलि चुकल अछि । मुदा मैथिलीक ने कथा संग्रह छपल अछि, आ ने आने भाषाक संग्रहक मैथिलीमे अनुवाद भेल अछि ।

एकर अतिरिक्त विभिन्न भारतीय भाषाक अनेक संकलन साहित्य अकादमी प्रकाशित कैलक अछि, जेना पूरनसिंहक रचनाक दू टा संकलन (पंजाबी); शहीद अब्दुल लतीफ, सामी, सचल आ दीवान कौड़ा मलक संग्रह (सिन्धी); सुब्रह्मण्य भारतीक कविता (तमिष) । परशुराम ओ प्रभात कुमार मुखोपाध्याय (बंगला) क चुनल कथाक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित भऽ चुकल अछि । परशुरामक कथाक त चारिम संस्करण निकलि चुकल अछि । अखतर मोहिउद्दीनक कश्मीरी-कथा-संग्रहक हिन्दी अनुवाद छपि चुकल अछि । वल्लत्तोलक मलयालम कविताक प्रतिनिधि संग्रहक हिन्दी आ कन्नड़ अनुवाद प्रकाशित भऽ चुकल अछि आ ओकर तमिष अनुवाद भऽ रहल अछि ! सुब्रह्मण्य भारतीक तमिष कविता संग्रहक हिन्दी, कन्नड़, मलयालम आ तेलुगु मे अनुवाद छपि चुकल अछि । मुदा मैथिलीमे सप्पतो खाय लेल जौं एकटा पोथी रहैत, मूल अथवा अनुवादे !

मैथिलीक नामपर सभठाम एकटा वड़का शून्य ! एहि स्थितिक लेल साहित्य अकादमीकेँ दोष देने कोनो लाभ नहि । दोष जौं सभसँ बेसी भऽ सकैत अछि त हमरे सभक । हमर प्रतिनिधि की कऽ रहल छथि ? कहाँदन कय वर्ष पूर्वे मैथिली सँ अपन प्रतिनिधि कथा-संग्रह देवऽ लेल कहल गेल छलैक, मुदा से साहित्य अकादमी केँ एहि द्वारे उपलब्ध नहि कराओल जा सकलै, जे ई निर्णय नहि भऽ सकलै जे किनका-किनका एहिमे राखल जाय !

४ दरयागंज, दिल्ली—६]

- की अपने प्रबुद्ध पाठक छी ?
- की अपनेक मोनमे कोनो तरहक नवीन विचार अछि ?
- की अपनेहुँ सम्मानक सङ्ग जीव्य चाहैत छी ?
- की अपनेक प्राण लेखनीमे बसैत अछि ?
- की अपने मिथिलाक सांस्कृतिक शिल्प, कला ओ उद्योगक विकासमे रुचि लैत छी ?

अपन भूमि

अपन भवन

आर

अपन परम्परामे

जीवित

मैथिलीक सर्वांगीण विकासलेल
कटिवद्ध

वैदेही-समिति

दरभंगा

अपनेक